एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 03, अंक: 04 (जुलाई-अगस्त, 2023)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

हॉर्टिकल्चर विविधीकरण में पैटर्न, निर्धारक तत्व और चुनौतियां

(*सरजेश कुमार मीना[1], तेंदुल चैहान[2], कृष्णा जाट[3] एवं देशराज मीना[4])
[1]उद्यान विज्ञान विभाग, बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश
[2]उद्यानिकी एवं वानिकी महाविद्यालय, झालावाड़, राजस्थान
[3]राजस्थान कृषि अनुसंधान संस्थान, दुर्गापुरा, जयपुर, राजस्थान
[4]कृषि महाविद्यालय, स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर
*संवादी लेखक का ईमेल पता: sarjeshmeena5757@gmail.com

हॉर्टिकल्चर, भारतीय कृषि के एक महत्वपूर्ण हिस्से के रूप में उभर रहा है, और वर्षों के साथ, यह अपनी विविधता को बढ़ा रहा है। यह खेती तकनीकी उन्नति, बागवानी के उत्तराधिकारियों की जागरूकता और नए विकल्पों की खोज में एक स्थायी प्रगति दर्ज कर रहा है। इस लेख में, हम हॉर्टिकल्चर विविधीकरण के मुख्य पैटर्न, निर्धारक तत्व और चुनौतियों की चर्चा करेंगे:

हॉर्टिकल्चर विविधीकरण के मुख्य पैटर्न:

1. वनस्पति विविधता: भारत में विभिन्न जलवायु और भूमि प्रकृतियों के कारण विभिन्न प्रकार की पौधों की विविधता है, जैसे कि फल, सब्जियां, फूल, और औषधीय पौधे।

2. खेती की तकनीकी उन्नति: नवाचारी खेती तकनीकों का प्रयोग करने से हॉर्टिकल्चर के क्षेत्र में उत्पादन में वृद्धि हो रही है। उच्च यूत्पादकता और गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए उन्नत जलवायु नियंत्रण, बीज प्रौद्योगिकी, और पोषण की तकनीकों का उपयोग किया जा रहा है।

3. उत्पाद की वृद्धि: हॉर्टिकल्चर से उत्पादन की वृद्धि हो रही है और उत्पादन को बढ़ाने के उपायों की खोज हो रही है, जैसे कि प्रजातियों के विकास, पोषण मूल्य बढ़ाने और नए बाजारों के प्राप्ति।

हॉर्टिकल्चर विविधीकरण के निर्धारक तत्व:

1. सूखा और जलवायु परिवर्तन: सूखा, अधिक वर्षा, और अद्यतित जलवायु परिवर्तन के कारण हॉर्टिकल्चर उत्पादन पर असर पड़ सकता है। नई प्रौद्योगिकी और पौधों की चयन में इसे मदद कर सकता है।

2. बाजार और निवेश: बाजार में पैटर्न और मांग के अनुसार उत्पादन को अनुकूलित करना महत्वपूर्ण है। निवेश की भारी आवश्यकता होती है, और खेतीकरों को वित्तीय सहायता और तकनीकी ज्ञान प्रदान करने के लिए सरकारी योजनाओं का लाभ उठाना होता है।

3. उत्पादक तकनीकों का संवर्द्धन: किसानों को नवाचारी खेती की तकनीकों का ज्ञान होना चाहिए। सरकार और खेती शिक्षा संस्थान इसमें सहायता कर सकते हैं। सशक्तिकरण कार्यक्रमों के तहत किसानों को नई तकनीकों का प्रयोग करने के लिए प्रशिक्षित किया जा रहा है।

हॉर्टिकल्चर विविधीकरण की चुनौतियां:

1. प्रवेश की कठिनाइयां: नई प्रजातियों और तकनीकियों को अपनाने में कठिनाइयां हो सकती हैं, और उत्पादन को लाभकारी बनाने में समय लगता है। किसानों को नए तकनीकों का सीखना और उन्हें अपनी कृषि में लागू करना मुश्किल हो सकता है।

2. बाग़वानी उपयुक्त भूमि की उपलब्धता: उच्च उत्पादकता वाली फसलों के लिए उपयुक्त भूमि की कमी हो सकती है, और यह उत्पादन को प्रतिबंधित कर सकती है।

3. वित्तीय सहायता की आवश्यकता: हॉर्टिकल्चर विविधीकरण के लिए उच्च निवेश और वित्तीय सहायता की आवश्यकता होती है, जो किसानों को प्राप्त करने में कठिनाइयों का सामना कर सकती है।

4. जल संकट: हॉर्टिकल्चर के लिए पानी एक महत्वपूर्ण चुनौती है, और जल संकट क्षेत्र को प्रभावित कर रहा है। समुचित जल प्रबंधन के बिना, डिवर्सिफिकेशन कठिन हो सकता है।

5. बागवानी के साथ साथी कीटों का प्रबंधन: डिवर्सिफिकेशन के साथ, कीट प्रबंधन भी महत्वपूर्ण होता है। कीटों के प्रति प्रतिष्ठित तकनीकों का उपयोग करना आवश्यक है।

6. साहित्यिक आंदोलन: किसानों को डिवर्सिफिकेशन के लिए साहित्यिक आंदोलन करना हो सकता है, जैसे कि बाजार में उनके उत्पादों के लिए सुनिश्चित बाजार मूल्यों की मांग करना।

संक्षेप में, होर्टिकल्चर विविधीकरण भारत में खेती के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन है, जिससे आर्थिक सुधार और किसानों की आय में वृद्धि हो रही है। हॉर्टिकल्चर विविधीकरण भारतीय कृषि के विकास के लिए महत्वपूर्ण है, लेकिन इसमें कई चुनौतियां हैं। सरकार, खेतीकरों को नवाचारी तकनीकों और वित्तीय सहायता प्रदान करके उनका समर्थन कर सकती है, जिससे हॉर्टिकल्चर उत्पादन में वृद्धि हो सकती है और कृषि विकास को बढ़ावा मिल सकता है।